खिड़की से हटाकर रखी हुई आरामकुर्सी

कुछ साल पहले मैं बम्बई में फिल्मकार कुमार शाहनी के घर उनसे मिलने गई थी। बिलकुल समुद्र के सामने बनी हुई एक बहुमंज़िला इमारत जिसके एक फ्लैट में कुमार रहते हैं। पता नहीं उनका घर किस मंज़िल पर था, लेकिन मैंने देखा कि उन्होंने एक आराम-कुर्सी खिड़की से ज़रा हटाकर डाल रखी थी जिस पर बैठकर समुद्र का सियाह विस्तार नज़र आता था। जब वे रसोई में एक बड़ी उम्दा चटनी बनाने में लगे थे तो कुछ देर के लिए मैं उनकी इस कुर्सी पर बैठकर नीचे फैले समुद्र को देखने लगी। उस कुर्सी पर बैठकर तट बिलकुल भी नज़र नहीं आता था। न तट पर घूमते हुए लोग, न ही कुछ और। दूर-दूर तक समुद्र और आसमान और किकियाते हुए सफेद जलपक्षी।

लेकिन मैं देखना चाहती थी कि उस ऊँचाई से तट कैसा दिख पड़ता है। सो मैं उठकर खिड़की के पास खड़ी होकर नीचे देखने लगी। जितना सुन्दर समुद्र था उतना ही दिल तोड़ने वाला समुद्र का किनारा था। तट पर अटे हुए कचरे से रेत बिलकुल दब-सी गई थी। लोग ठेलों पर बिकने वाले सामान खा पीकर और रेत पर कचरे की बारिश होती चली जा रही थी। उधर रसोई में कुमार शाहनी की बनाई चटनी की खुशबू से पूरा घर महक उठा था। कुमार ने भी दुनिया में फैलते हुए कचरे का गम भुलाने के लिए अपने जीवन को सुन्दर बनाने के कुछ टोटके खोज लिए थे। उन्होंने अपनी कुर्सी क्यों खिड़की से कुछ दूरी पर रखी थी, मुझे उसी समय समझ में आ चुका था। किसी प्राचीन सिद्ध ने कहा था, "जब तुम चावल उबालते हो तो जान लो कि पानी तुम्हारा अपना जीवन ही तो है।" मैंने सोचा, अगर मैं भी निचले तल्ले वाले मकान में रह रही होती तो गली में डला कचरा पूरा दिन दिखता रहता। मेरे बरामदे से मुझे पीपल के पेड़ों के बदलते हुए रंग दिखाई देते रहते हैं। नर्मदा नदी के पास होने से पक्षियों का कलरव सुबह से शाम तक कानों में रस घोलता रहता है।

लेकिन यकायक मेरा बरामद और कमरा भयानक धुएँ से भर जाता है। पक्षी सब उड़ जाते हैं, लेकिन मैं अपने आसपास के घोंसलों में गिलहरी और गौरैया के बच्चों के बारे में सोचती हूँ जो नीचे जलती हुई पन्नियों और प्लास्टिक के धुएँ से बचकर कहीं नहीं जा सकते। मैं बरामदे से नीचे झाँककर देखती हूँ – एक लँगड़ा गधा जो इस हाल में भी नदी की रेत ढोकर लाता है, जलते हुए कचरे के पास में पड़े पपीते के छिलके को खाने की कोशिश कर रहा है। एक बहुत फूली हुई गाय जो सैकड़ों पत्तियों समेत फिकी हुई गुठलियाँ और छिलके खा चुकी है, एक बार फिर उसी धुएँ में एक पन्नी को खोलने में लगी है। यह आग जब बुझेगी इन बेचारे पशुओं के अलावा मेरे घर के सामने स्कूल के बच्चे ज़हरीली गैस में कई साँसें ले चुके होंगे। फिर कचरे की बेहद ज़हरीली राख हवा में उड़ेगी और नदी में उतर जाएगी। हम लोग अपने कचरे पर रोक नहीं लगा सकते और उन दो माँओं को पूरी तरह मार देने में लगे हैं जिनकी हम पूजा करते हैं – गोमाता और नर्मदा मैया।

इस बार भी मैं भागकर नीचे जाती हूँ कुछ खाना लेकर ताकि गधे और गाय को धुएँ से निकालकर कुछ ठीकठाक खिला सकूँ। मैं देखती हूँ कि कूलरों की खसों से गली भरी पड़ी है, और उन्हें भी आग लगाई जाने वाली है जबकि बड़ी आसानी से इन खसों की खाद भी बनाई जा सकती है। इसी तरह गिरे हुए पत्तों की भी जिन्हें उगाने में प्रकृति की इतनी ऊर्जा लगी है। अभी कुछ ही दिनों में कटनी के बाद खेतों में पुआल के डण्ठलों को आग लगाई जाएगी, और पृथ्वी के असली केंचुओं सहित और भी कई मित्र-प्राणी मारे जाएँगे। धुँआ अलग फैलेगा।

मेरे घर के पास बने हुए एक बड़े खूबसूरत जंगल-नुमा हर्बल पार्क में अभी-अभी बहुत बड़े पैमाने पर होशंगाबाद के निवासियों को दावतें उड़ाने की छूट मिल गई है। आप यकीन मानिए उस पार्क में बड़े ईमानदार अफसरों की बदौलत इतने बढ़िया पेड़-पौधे फल फूल रहे थे कि कभी न दिखने वाले पक्षी भी आने लगे थे। लेकिन अब उसी पार्क में प्लास्टिक के गिलास, थर्माकॉल की सैंकड़ों प्लेटें, प्लास्टिक के चम्मच, गुटके के पाउच, और रंग-बिरंगी पन्नियाँ भर गई हैं। ऐसी जगहों पर भी जहाँ खाइयाँ हैं और नीचे उतरकर सफाई करना कठिन है। मैंने नए फॉरेस्ट अफसर से निवेदन तो किया है कि पार्टियों पर रोक लगाएँ, अब बाकि तो उनकी कृपा पर है। लेकिन मैं उस हर्बल पार्क में जाकर सैर करने से अब डरने लगी हूँ कि पता नहीं क्या देखने को मिलेगा।

अन्त में, मैं आज के दिन अपने मित्र कुमार को याद करते हुए अपने बरामदे में पक्षियों के गानों को सुनते हुए या तो चित्र बनाऊँगी या कुछ लिखूँगी या चुपचाप बैठकर कोई किताब पढ़ूँगी।

लेकिन पता नहीं क्यों इस सुखद घड़ी में मुझे अपने दोस्त उदयन की एक बात याद आ गई एक ऐसे काल्पनिक म्यूज़ियम (अजायबघर) के बारे में – इस म्यूज़ियम में एक नर-कंकाल रखा हुआ है। नीचे लिखा है: मनुष्य जाति इसलिए खत्म हुई क्योंकि वह समझ नहीं पाई अपने द्वारा पैदा किए हुए कचरे का वह क्या करे।

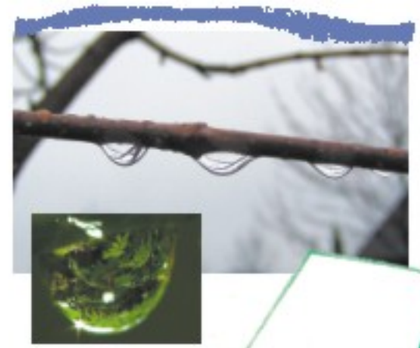

पानी का लेंस

गर्मी की छुट्टी

छोटी चीज़ों का बड़े रूप में देखने का अपना ही मज़ा है। तो क्यों ना अपना एक लेंस बनाएँ!

एक काँच की स्लाइड लो और उसे अपने बालों पर रगड़ लो ताकि उस पर तेल की एक पतली-सी परत बन जाए। अब इस पर पानी की एक बूँद डाल कर उससे किसी भी छोटी चीज़ को देखो। अब स्लाइड को पलटकर पहली वाली बूँद पर एक और बूँद डालकर देखो? क्या कोई फर्क पड़ा? चाहो तो पानी की बजाए नारियल के तेल या ग्लिसरीन का इस्तेमाल कर के भी देखो।

चित्रः दिलीप चिंचालकर